http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 8, 46-51

Article ID: 664

प्राकृतिक खेती में जीवामृत, घनजीवामृत, नीमास्त्र, अग्निअस्त्र, ब्रह्मास्त्र, फफूंदनाशक एवं बीजामृत का महत्व

रूपेंद्र कुमार[1]
मम्ता कम्बोज [2], देवेंद्र सिंह[3]

[1]कृषि विज्ञान केन्द्र, रोहतक
[2]कपास अनुभाग
आनुवंशिकी और पादप प्रजनन
[3]सहायक वैज्ञानिक बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय , हिसार

*अनुरूपी लेखक

रूपेंद्र कुमार*

परिचय

भारत की कृषि परंपरा सदियों से प्रकृति के साथ जुड़ी रही है। किसान मिट्टी, पानी, पशुधन, पेड़-पौधों और स्थानीय संसाधनों का उपयोग करके खेती करते आए हैं। समय के साथ कृषि तकनीकों में अनेक बदलाव हुए और रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों के उपयोग से खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने में सहायता मिली। लेकिन इनके असंतुलित उपयोग, खेती की बढ़ती लागत, मिट्टी में जैविक पदार्थों की कमी और पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों ने टिकाऊ कृषि की आवश्यकता को और महत्वपूर्ण बना दिया है।ऐसी परिस्थिति में प्राकृतिक खेती एक ऐसी कृषि पद्धति के रूप में उभर रही है, जिसका उद्देश्य मिट्टी की सेहत सुधारना, स्थानीय संसाधनों का उपयोग बढ़ाना, प्राकृतिक प्रक्रियाओं को प्रोत्साहित करना और बाहरी कृषि आदानों पर निर्भरता कम करना है।प्राकृतिक खेती में जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत, नीमास्त्र, अग्निअस्त्र और ब्रह्मास्त्र जैसे पारंपरिक कृषि मिश्रणों का उपयोग किया जाता है। इनके साथ फफूंदजनित रोगों के प्रबंधन के लिए विभिन्न जैविक एवं प्राकृतिक उपाय अपनाए जाते हैं। इनका उद्देश्य फसल की वृद्धि में सहायता करना तथा कीटों और रोगों के प्रबंधन के लिए स्थानीय संसाधनों का उपयोग करना है।

प्राकृतिक खेती की सफलता केवल इन मिश्रणों को बनाने में नहीं, बल्कि उनकी सही तैयारी, उचित उपयोग, फसल की नियमित निगरानी और मिट्टी की वास्तविक जरूरतों को समझने में है।यह भी ध्यान रखना चाहिए कि इन सभी मिश्रणों के प्रभाव के वैज्ञानिक प्रमाण समान स्तर के नहीं हैं। इसलिए इन्हें हर समस्या का निश्चित समाधान मानने के बजाय उचित कृषि प्रबंधन के हिस्से के रूप में अपनाना चाहिए।

1. जीवामृत का महत्व: मिट्टी के सूक्ष्मजीवों को प्रोत्साहन

जीवामृत प्राकृतिक खेती में प्रचलित एक तरल मिश्रण है, जिसे सामान्यतः गोबर, गोमूत्र, गुड़, दाल के आटे और मिट्टी जैसे स्थानीय संसाधनों से तैयार किया जाता है। इसकी तैयारी की विधि क्षेत्र और प्राकृतिक खेती की प्रणाली के अनुसार अलग-अलग हो सकती है। जीवामृत का प्रमुख उद्देश्य मिट्टी में सूक्ष्मजीवी गतिविधियों को प्रोत्साहित करना और जैविक पदार्थों के विघटन तथा पोषक तत्वों के चक्र में सहायता करना है। इसमें मौजूद सूक्ष्मजीवों और आसानी से उपलब्ध कार्बनिक पदार्थों की भूमिका मिश्रण की गुणवत्ता तथा तैयारी की परिस्थितियों पर निर्भर करती है।

जीवामृत के प्रमुख लाभ

मिट्टी की जैविक गतिविधियों को बढ़ावा: उचित परिस्थितियों में जीवामृत मिट्टी में सूक्ष्मजीवी गतिविधियों को प्रोत्साहित कर सकता है। इससे जैविक पदार्थों के विघटन और पोषक तत्वों के चक्र में मदद मिल सकती है।

पोषक तत्वों की उपलब्धता में सहायता: मिट्टी में मौजूद कुछ पोषक तत्वों के रूपांतरण और पौधों के लिए उनकी उपलब्धता में सूक्ष्मजीव योगदान देते हैं। जीवामृत का उपयोग इस प्रक्रिया को सहारा देने के उद्देश्य से किया जाता है।

स्थानीय संसाधनों का उपयोग: जीवामृत बनाने में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। इससे किसान को कुछ कृषि आदानों के लिए बाजार पर निर्भरता कम करने का अवसर मिल सकता है।

प्राकृतिक खेती के प्रबंधन में सहयोग: इसे मल्चिंग, फसल चक्र, हरी खाद और फसल अवशेष प्रबंधन जैसी विधियों के साथ अपनाया जा सकता है।

हालाँकि, जीवामृत को सभी आवश्यक पोषक तत्वों का पूर्ण विकल्प नहीं माना जाना चाहिए। इसका उपयोग मिट्टी की जाँच, फसल की जरूरत और स्थानीय कृषि विशेषज्ञों की सलाह के अनुरूप करना चाहिए।

2. घनजीवामृत का महत्व: ठोस रूप में स्थानीय संसाधनों का उपयोग

घनजीवामृत जीवामृत का ठोस रूप माना जाता है। इसे सामान्यतः गोबर और अन्य उपयुक्त स्थानीय सामग्री के साथ तैयार किया जाता है। विभिन्न प्राकृतिक खेती प्रणालियों में इसकी तैयारी और उपयोग की विधियाँ अलग हो सकती हैं।

इसका उद्देश्य मिट्टी में जैविक पदार्थों और सूक्ष्मजीवी गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए एक उपयोगी कृषि सामग्री उपलब्ध कराना है।

घनजीवामृत के प्रमुख लाभ

मिट्टी में जैविक पदार्थों का योगदान: उचित तरीके से तैयार और उपयोग किए जाने पर घनजीवामृत मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ जोड़ सकता है।

स्थानीय स्तर पर तैयारी: किसान उपलब्ध संसाधनों से इसे तैयार कर सकते हैं, जिससे कुछ बाहरी कृषि आदानों की आवश्यकता कम करने में सहायता मिल सकती है।

खेत में उपयोग की सुविधा: ठोस रूप होने के कारण इसे उपयुक्त समय पर खेत में डालना या मिट्टी के साथ मिलाना कुछ परिस्थितियों में सुविधाजनक हो सकता है।

मिट्टी की सेहत सुधारने की व्यापक रणनीति: इसका लाभ अधिक प्रभावी तब हो सकता है, जब किसान इसके साथ फसल अवशेषों का पुनः उपयोग, मल्चिंग, फसल चक्र और उचित जल प्रबंधन भी अपनाएँ।

यह समझना आवश्यक है कि घनजीवामृत की गुणवत्ता उसकी सामग्री, तैयारी, नमी और भंडारण पर निर्भर करती है। इसे संतुलित पोषण प्रबंधन के एक हिस्से के रूप में ही देखना चाहिए।

3. बीजामृत का महत्व: बुवाई से पहले बीजों की सुरक्षा

बीजामृत प्राकृतिक खेती में बीज उपचार के लिए उपयोग किया जाने वाला पारंपरिक मिश्रण है। इसे सामान्यतः गोबर, गोमूत्र, चूना और स्थानीय मिट्टी जैसे पदार्थों से तैयार किया जाता है। अलग-अलग फसलों और क्षेत्रों में इसकी विधि भिन्न हो सकती है।बीजामृत का उद्देश्य बुवाई से पहले बीजों को उपचारित करना और कुछ बीजजनित रोगों के जोखिम को कम करने में सहायता करना है। अच्छी गुणवत्ता वाले बीज, उचित बीज उपचार और अनुकूल बुवाई परिस्थितियाँ फसल की शुरुआती स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

बीजामृत के प्रमुख लाभ

बीजों की शुरुआती सुरक्षा में सहायता: उचित तरीके से किए गए बीज उपचार से कुछ रोगजनकों के जोखिम को कम करने में मदद मिल सकती है। लेकिन बीजामृत सभी बीजजनित रोगों पर प्रभावी हो, यह सुनिश्चित नहीं है।

अंकुरण और पौध स्थापना: स्वस्थ बीज, उचित नमी, सही तापमान और अच्छी बुवाई परिस्थितियाँ अंकुरण के लिए आवश्यक हैं। बीजामृत का उपयोग इन बुनियादी जरूरतों का विकल्प नहीं है।

कम लागत वाली उपचार विधि: स्थानीय सामग्री उपलब्ध होने पर किसान बीज उपचार के लिए इस पारंपरिक विधि पर विचार कर सकते हैं।

बुवाई से पहले बीजों की गुणवत्ता पर ध्यान: बीजामृत अपनाने के साथ-साथ रोगमुक्त, प्रमाणित या विश्वसनीय स्रोत से प्राप्त बीजों का चयन करना भी जरूरी है।

बीजामृत का उपयोग करने से पहले फसल की प्रकृति और बीजों की संवेदनशीलता को समझना चाहिए। विशेष रूप से छोटे, नाजुक या महँगे बीजों पर बिना परीक्षण के कोई नया घोल नहीं लगाना चाहिए। बीजों को उपचार के बाद सही तरीके से सुखाने और समय पर बोने के संबंध में स्थानीय कृषि विशेषज्ञ की सलाह लेना उपयोगी है।

4. नीमास्त्र का महत्व: प्राकृतिक कीट प्रबंधन में उपयोग

नीमास्त्र नीम की पत्तियों और अन्य उपयुक्त नीम सामग्री से तैयार किया जाने वाला पारंपरिक कृषि मिश्रण है। कुछ विधियों में इसके साथ गोबर और गोमूत्र का उपयोग भी किया जाता है।नीम में पाए जाने वाले कुछ प्राकृतिक यौगिक कीटों के भोजन करने, वृद्धि और व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं। इसी कारण नीम आधारित उत्पादों का उपयोग कृषि में कीट प्रबंधन के लिए किया जाता है।

नीमास्त्र के प्रमुख लाभ

कुछ कीटों के प्रबंधन में सहायता: नीम आधारित मिश्रण कुछ कीटों के विरुद्ध उपयोगी हो सकते हैं। उनका प्रभाव कीट की प्रजाति, उसकी अवस्था, मिश्रण की गुणवत्ता और प्रयोग के समय पर निर्भर करता है।

स्थानीय संसाधनों का उपयोग: जिन क्षेत्रों में नीम के पेड़ उपलब्ध हैं, वहाँ नीम की पत्तियों और अन्य उपयुक्त सामग्री का उपयोग किया जा सकता है।

एकीकृत कीट प्रबंधन का हिस्सा: नीमास्त्र को खेत की नियमित निगरानी, कीटग्रस्त भागों की पहचान, फेरोमोन ट्रैप और लाभकारी कीटों के संरक्षण जैसी विधियों के साथ अपनाना बेहतर है।

अनावश्यक कीटनाशक प्रयोग को कम करने की संभावना: सही समय पर कीट की पहचान और उपयुक्त नियंत्रण विधि अपनाने से अनावश्यक छिड़काव से बचा जा सकता है।

लेकिन नीमास्त्र हर कीट के विरुद्ध समान रूप से प्रभावी नहीं होता। इसके छिड़काव से पहले फसल और कीट की सही पहचान करना आवश्यक है। लाभकारी कीटों तथा परागण करने वाले जीवों को नुकसान से बचाने के लिए छिड़काव का समय और तरीका भी महत्वपूर्ण है।

5. अग्निअस्त्र का महत्व: कुछ नुकसानदायक कीटों के प्रबंधन में उपयोग

अग्निअस्त्र प्राकृतिक खेती में प्रचलित एक पारंपरिक कीट प्रबंधन मिश्रण है। इसकी विभिन्न विधियों में नीम, मिर्च, लहसुन और गोमूत्र जैसी सामग्री का उपयोग किया जाता है। इसकी संरचना क्षेत्र और अपनाई जाने वाली प्राकृतिक खेती पद्धति के अनुसार बदल सकती है। अग्निअस्त्र का उपयोग कुछ चबाने वाले कीटों और अन्य नुकसानदायक कीटों के प्रबंधन के उद्देश्य से किया जाता है। हालांकि, इसकी प्रभावशीलता फसल, कीट, सामग्री की गुणवत्ता और तैयार करने की विधि पर निर्भर करती है।

अग्निअस्त्र के प्रमुख लाभ

कुछ कीटों के विरुद्ध संभावित उपयोग: इसके घटक कुछ कीटों के व्यवहार या गतिविधि को प्रभावित कर सकते हैं। लेकिन हर फसल और हर कीट के लिए इसकी प्रभावशीलता प्रमाणित नहीं है।

स्थानीय सामग्री पर आधारित विधि: किसान उपलब्ध वनस्पतियों का उपयोग करके पारंपरिक मिश्रण तैयार कर सकते हैं।

कीट निगरानी को प्रोत्साहन: इसका सही उपयोग तभी संभव है, जब किसान खेत में कीटों की संख्या और फसल पर होने वाले नुकसान का नियमित निरीक्षण करें।

एकीकृत प्रबंधन में सहयोग: इसे अन्य गैर-रासायनिक विधियों के साथ जोड़ा जा सकता है, बशर्ते मिश्रण फसल के लिए सुरक्षित हो और स्थानीय कृषि सलाह के अनुरूप प्रयोग किया जाए। अग्निअस्त्र में तीखी या जलन पैदा करने वाली सामग्री हो सकती है। इसे तैयार करते समय दस्ताने और आँखों की सुरक्षा जैसे उपाय अपनाएँ। इसे त्वचा, आँखों और साँस के संपर्क से बचाकर रखें। पहले छोटे क्षेत्र में परीक्षण करें और फसल पर प्रतिकूल प्रभाव दिखने पर उपयोग रोक दें।

6. ब्रह्मास्त्र का महत्व: वनस्पति आधारित कीट प्रबंधन

ब्रह्मास्त्र प्राकृतिक खेती में प्रयुक्त एक अन्य पारंपरिक वनस्पति आधारित मिश्रण है। इसे अलग-अलग क्षेत्रों में नीम, करंज, धतूरा, सीताफल या अन्य स्थानीय पौधों की सामग्री से तैयार किया जा सकता है। इसकी सामग्री और तैयारी की विधि में काफी भिन्नता पाई जाती है। कुछ पौधों में प्राकृतिक रूप से ऐसे रासायनिक यौगिक मौजूद होते हैं, जो कीटों को प्रभावित कर सकते हैं। इसी आधार पर वनस्पति आधारित मिश्रणों का उपयोग कुछ कीटों के प्रबंधन में किया जाता है।

ब्रह्मास्त्र के प्रमुख लाभ

वनस्पति आधारित विकल्प: स्थानीय स्तर पर उपलब्ध उपयुक्त पौधों की सामग्री का उपयोग पारंपरिक कीट प्रबंधन में किया जा सकता है।

कुछ कीटों पर संभावित प्रभाव: सही सामग्री और उचित प्रयोग की स्थिति में यह कुछ नुकसानदायक कीटों के प्रबंधन में सहायता कर सकता है।

एकीकृत कीट प्रबंधन का हिस्सा: कीट निगरानी, खेत की स्वच्छता, फसल विविधीकरण और लाभकारी जीवों के संरक्षण के साथ इसका उपयोग अधिक व्यवस्थित हो सकता है।

स्थानीय ज्ञान का उपयोग: पारंपरिक कृषि ज्ञान का दस्तावेजीकरण और वैज्ञानिक परीक्षण किसानों के लिए उपयोगी जानकारी विकसित करने में मदद कर सकता है।

ब्रह्मास्त्र के संबंध में विशेष सावधानी जरूरी है। धतूरा जैसे कुछ पौधे मनुष्यों और पशुओं के लिए विषैले हो सकते हैं। इसलिए इसकी तैयारी और प्रयोग बिना प्रशिक्षित मार्गदर्शन के नहीं करना चाहिए। ऐसे मिश्रणों को खाद्य पदार्थों, बच्चों, पशुओं और जल स्रोतों से दूर रखना चाहिए। फसल पर उपयोग से पहले उसकी सुरक्षा और उपयुक्तता की पुष्टि आवश्यक है।

7. प्राकृतिक फफूंदनाशकों का महत्व: फसल रोगों की रोकथाम और प्रबंधन

प्राकृतिक खेती में फफूंदजनित रोगों का प्रबंधन एक महत्वपूर्ण विषय है। कई फसलों में बीज सड़न, जड़ सड़न, पत्ती धब्बा, झुलसा और अन्य रोग उत्पादन को प्रभावित कर सकते हैं। हर रोग फफूंद से ही नहीं होता। कुछ रोग जीवाणुओं, विषाणुओं या अन्य कारणों से भी उत्पन्न होते हैं। इसलिए रोग की सही पहचान किए बिना कोई भी घोल या उपचार अपनाना उचित नहीं है। प्राकृतिक खेती में फफूंदजनित रोगों के प्रबंधन के लिए विभिन्न उपाय अपनाए जा सकते हैं।

प्रमुख प्राकृतिक और जैविक उपाय

ट्राइकोडर्मा जैसे जैव नियंत्रण एजेंट: कुछ ट्राइकोडर्मा प्रजातियों का उपयोग मिट्टी और पौधों से जुड़े चुनिंदा फफूंदजनित रोगों के प्रबंधन में किया जाता है। इनका प्रयोग सही उत्पाद, फसल और रोग के अनुसार करना चाहिए।

बीज की गुणवत्ता: स्वस्थ, रोगमुक्त और विश्वसनीय स्रोत से प्राप्त बीजों का उपयोग शुरुआती रोग जोखिम को कम करने में मदद कर सकता है।

फसल चक्र: कुछ मिट्टीजनित रोगों के जीवन चक्र को बाधित करने के लिए उपयुक्त फसल चक्र उपयोगी हो सकता है।

जल प्रबंधन: अत्यधिक नमी, जलभराव और खराब जल निकास अनेक रोगों को बढ़ावा दे सकते हैं। उचित सिंचाई और जल निकास आवश्यक है।

फसल अवशेष प्रबंधन: रोगग्रस्त अवशेषों को उचित तरीके से प्रबंधित करना चाहिए, ताकि रोगों का प्रसार कम हो सके।

नीम आधारित उत्पाद और अन्य जैविक विकल्प: कुछ उत्पाद विशिष्ट रोगों या कीटों के प्रबंधन में सहायक हो सकते हैं, लेकिन उनका उपयोग उत्पाद के लेबल और विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार ही करना चाहिए। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि सभी प्राकृतिक घोल फफूंदनाशक नहीं होते। जीवामृत, नीमास्त्र या अन्य पारंपरिक मिश्रणों को बिना प्रमाण के हर फफूंदजनित रोग का उपचार नहीं मानना चाहिए। गंभीर रोग की स्थिति में कृषि विज्ञान केंद्र या कृषि विशेषज्ञ से सलाह लेना उचित है।

8. इन सभी मिश्रणों का संयुक्त महत्व

जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत, नीमास्त्र, अग्निअस्त्र, ब्रह्मास्त्र और प्राकृतिक फफूंद रोग प्रबंधन के उपाय प्राकृतिक खेती में अलग-अलग उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाते हैं। इनकी भूमिका को समझना आवश्यक है, क्योंकि सभी मिश्रण एक ही काम नहीं करते।

मिश्रण या उपाय	मुख्य उद्देश्य
जीवामृत	मिट्टी की सूक्ष्मजीवी गतिविधियों को प्रोत्साहित करना
घनजीवामृत	ठोस रूप में जैविक पदार्थों का योगदान और मिट्टी प्रबंधन
बीजामृत	बुवाई से पहले बीज उपचार
नीमास्त्र	कुछ नुकसानदायक कीटों का प्रबंधन
अग्निअस्त्र	कुछ कीटों के प्रबंधन के लिए पारंपरिक वनस्पति मिश्रण
ब्रह्मास्त्र	वनस्पति आधारित कीट प्रबंधन
जैविक फफूंद रोग प्रबंधन	चुनिंदा फफूंदजनित रोगों की रोकथाम या नियंत्रण

इन उपायों को अपनाने से पहले खेत की स्थिति, फसल की जरूरत और समस्या की प्रकृति को समझना चाहिए। किसी भी मिश्रण को केवल इसलिए उपयोग नहीं करना चाहिए कि वह प्राकृतिक खेती में प्रचलित है।

9. प्राकृतिक मिश्रण तैयार करने और उपयोग करने में सावधानियाँ

प्राकृतिक खेती में उपयोग किए जाने वाले मिश्रणों की गुणवत्ता सही तैयारी, स्वच्छता और भंडारण पर निर्भर करती है। गलत तरीके से तैयार किया गया मिश्रण अपेक्षित लाभ नहीं दे सकता और कुछ परिस्थितियों में फसल या उपयोगकर्ता के लिए जोखिम भी पैदा कर सकता है।

किसानों को निम्नलिखित सावधानियाँ अपनानी चाहिए:

1. **साफ सामग्री का चयन करें:** सड़ी-गली, दूषित या रोगग्रस्त सामग्री का प्रयोग न करें।
2. **सही विधि अपनाएँ:** प्रत्येक मिश्रण की तैयारी फसल और स्थानीय कृषि पद्धति के अनुसार प्रशिक्षित व्यक्ति की सलाह से करें।
3. **सुरक्षा उपकरण पहनें:** वनस्पति आधारित तीखे या विषैले मिश्रण तैयार करते समय दस्ताने, आँखों की सुरक्षा और उपयुक्त कपड़ों का उपयोग करें।

4. **पहले छोटे क्षेत्र में परीक्षण करें:** किसी नए घोल को पूरे खेत में प्रयोग करने से पहले सीमित क्षेत्र पर उसकी फसल-सुरक्षा जाँचें।
5. **मात्रा और समय का ध्यान रखें:** छिड़काव की मात्रा, मौसम और फसल की अवस्था महत्वपूर्ण हैं। तेज हवा, अत्यधिक गर्मी और परागण के सक्रिय समय में छिड़काव से बचने की जरूरत हो सकती है।
6. **भंडारण सावधानी से करें:** मिश्रणों को बच्चों, पशुओं और खाद्य सामग्री से दूर रखें। विषैले पौधों वाले मिश्रणों को स्पष्ट रूप से चिह्नित करें।
7. **समस्या की सही पहचान करें:** कीट या रोग की पुष्टि किए बिना किसी मिश्रण का अंधाधुंध प्रयोग न करें।
8. **परिणामों का रिकॉर्ड रखें:** उपयोग की गई विधि, फसल की प्रतिक्रिया, कीटों की स्थिति और उत्पादन का रिकॉर्ड रखें।

प्राकृतिक सामग्री का अर्थ हमेशा पूरी तरह सुरक्षित होना नहीं है। इसलिए सुरक्षा और वैज्ञानिक मार्गदर्शन को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

10. किसानों के लिए व्यावहारिक सुझाव

प्राकृतिक खेती अपनाने वाले किसान इन मिश्रणों का उपयोग करने से पहले अपनी खेती की योजना बना सकते हैं। सबसे पहले मिट्टी की जाँच करवाएँ और खेत में उपलब्ध जैविक संसाधनों की पहचान करें। इसके बाद फसल की बुवाई से पहले बीज की गुणवत्ता और उपयुक्त बीज उपचार पर ध्यान दें। फसल उगने के दौरान नियमित रूप से खेत का निरीक्षण करें और कीटों या रोगों के शुरुआती लक्षणों को पहचानें। यदि कीट दिखाई दें, तो पहले उनकी सही पहचान करें। लाभकारी कीटों की उपस्थिति, नुकसान का स्तर और फसल की अवस्था को ध्यान में रखते हुए नियंत्रण का निर्णय लें। इसी प्रकार रोग के लक्षण दिखने पर केवल पत्तियों के रंग या धब्बों के आधार पर निष्कर्ष न निकालें, बल्कि विशेषज्ञ से पुष्टि कराएँ। जीवामृत और घनजीवामृत जैसे मिश्रणों का उपयोग करते समय यह ध्यान रखें कि मिट्टी में पर्याप्त जैविक पदार्थ लौटाने के लिए फसल अवशेष, कम्पोस्ट, हरी खाद और उचित फसल चक्र भी महत्वपूर्ण हैं। किसानों को अपनी लागत और उत्पादन का हिसाब भी रखना चाहिए। इससे यह समझने में मदद मिलेगी कि कौन-सी तकनीक उनके खेत में प्रभावी और आर्थिक रूप से उपयोगी है।

निष्कर्ष: प्राकृतिक खेती में सही जानकारी ही सफलता की कुंजी

प्राकृतिक खेती में जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत, नीमास्त्र, अग्निअस्त्र, ब्रह्मास्त्र और जैविक फफूंद रोग प्रबंधन के उपायों का अपना-अपना महत्व है। कुछ उपाय मिट्टी की जैविक गतिविधियों और पोषक तत्वों के चक्र को सहारा देने के उद्देश्य से अपनाए जाते हैं, जबकि अन्य का उपयोग बीज उपचार या कीट एवं रोग प्रबंधन के लिए किया जाता है। इनका सफल उपयोग तभी संभव है, जब किसान सही सामग्री, उचित तैयारी, सुरक्षित प्रयोग और फसल की जरूरतों पर ध्यान दें। इन मिश्रणों की प्रभावशीलता हर परिस्थिति में समान नहीं होती। इसलिए वैज्ञानिक परीक्षण, स्थानीय कृषि विशेषज्ञों का मार्गदर्शन और खेत में परिणामों का मूल्यांकन जरूरी है। प्राकृतिक खेती का मूल उद्देश्य केवल रासायनिक आदानों को छोड़ना नहीं, बल्कि मिट्टी की सेहत सुधारना, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना और खेती को अधिक टिकाऊ बनाना है। यदि किसान स्थानीय ज्ञान और आधुनिक कृषि विज्ञान का संतुलित उपयोग करें, तो वे खेती की लागत के बेहतर प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण और मिट्टी की दीर्घकालिक सेहत की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।